जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

पर को जानने में दोष नहीं; परन्तु पर में अटकने में, उलझने में तो हानि है ही।

– बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ – 21

वर्ष : 26, अंक : 9 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अगस्त (प्रथम) 2003 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पण्डित संजीवकुमार गोधा | वार्षिक शुल्क : 25/-, एकप्रति : 2/-

महामहिम राज्यपाल श्री निर्मलचन्द जैन का अभिनन्दन समारोह एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का उद्घाटन

जयपुर : आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सदुपदेश से निर्मित श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 27 जुलाई से 5 अगस्त तक श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा आयोजित 26 वें बृहद आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन राजस्थान के महामहिम राज्यपाल श्री निर्मलचन्दजी जैन के करकमलों से दिनांक 27 जुलाई को प्रात: 9 बजे सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आयोजित सभा में महामहिम श्री निर्मलचन्दजी जैन के अतिरिक्त अध्यक्ष के रूप में श्री नरेशकुमारजी सेठी जयपुर, महामहोपाध्याय डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, श्री बसन्तभाई दोशी मुम्बई, श्री सुशीलकुमारजी गोदीका, ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा एवं श्री विमलकुमारजी जैन दिल्ली मंचासीन थे।

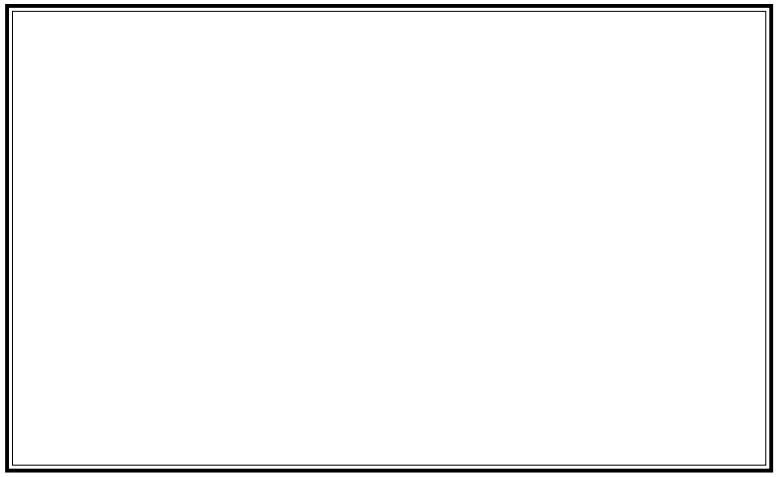

राज्यपाल को प्रशस्ति भेंट करते हुये डॉ. भारिल्ल, साथ में हैं श्री नरेशकुमारजी सेठी

पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा श्री निर्मलचन्दजी जैन का परिचय दिया गया, तदुपरान्त पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका ने श्री निर्मलचन्दजी जैन का तिलक लगाकर, आत्मार्थी ट्रस्ट, दिल्ली के अध्यक्ष श्री विमलकुमारजी जैन ने माल्यार्पण, दिग. जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी के अध्यक्ष श्री नरेशकुमारजी सेठी ने शाल, श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट के महामंत्री श्री बसंन्तभाई एम. दोशी ने श्रीफल तथा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के महामंत्री डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा प्रशस्ति भेंटकर अभिनन्दन किया गया। प्रशस्ति का वाचन स्वयं डॉ. भारिल्ल ने किया।

इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण भारत से पधारे 42 विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा महामहिम राज्यपाल श्री निर्मलचन्दजी का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। साथ ही श्री निर्मलचन्दजी जैन की धर्मपत्नी श्रीमती रोहिणी जैन को श्रीमती कमलाजी भारिल्ल द्वारा तिलक, श्रीमती स्वयंप्रभा गदइया एवं श्रीमती विमला वैद द्वारा माल्यार्पण तथा श्रीमती गुणमाला भारिल्ल द्वारा शाल उड़ा कर अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर एवं श्री बसन्तभाई दोशी, मुम्बई का मार्मिक उद्बोधन हुआ।

उद्घाटन समारोह के अवसर पर ही **डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल और उनका कथा साहित्य** विषय पर अरुणकुमार जैन द्वारा राजस्थान विश्वविद्यालय की एम.ए. (उत्तरार्द्ध) परीक्षा के पंचम पत्र के रूप में लिखे गये शोध प्रबन्ध का विमोचन किया गया। अन्त में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने आभार प्रदर्शन किया ।

सभा का संचालन बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री ने किया।

उद्घाटन सभा के पूर्व श्री मोतीचन्दजी लुहाड़िया जोधपुर एवं श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी परिवार किशनगढ़ द्वारा झण्डारोहण तथा शिविर मण्डप का उद्घाटन श्री अजितप्रसादजी दिल्ली एवं श्री महेन्द्रकुमारजी सेठी जयपुर द्वारा किया गया।

ज्ञातव्य है कि शिविर के आमंत्रणकर्त्ता स्व. राजमलजी पाटनी की स्मृति में उनकी ध.प. श्रीमती रतनदेवी पाटनी व सुपुत्र श्री अशोक पाटनी कोलकाता एवं एक मुमुक्षु भाई - हस्ते सुमनभाई दोशी राजकोट है।

सम्पादकीय –

हरिवंश कथा 34

– रतनचन्द भारिल्ल

सुभौम चक्रवर्ती

जिनधर्म उपासक मोक्ष की प्राप्ति तो करता ही है; किन्तु जब अपने सम्यक् पुरुषार्थ की अपूर्णता के कारण मुक्ति का लाभ नहीं ले पाता, तब तक संसार में भी अपने जिनधर्म की आराधना से प्राप्त पुण्य के प्रताप से लौकिक अनुकूलतायें एवं मनोवांछित कार्यों में सफलता प्राप्त करता है।

नमि के वंश में अरिंजयपुर का एक मेघनाद नामक राजा हुआ। उसके एक *पद्मश्री* नाम की कन्या थी। उस कन्या के विषय में निमित्त ज्ञानी ने बताया कि ह्न 'यह चक्रवर्ती की पत्नी होगी।' जबकि बज्रपाणि राजा इस कन्या के साथ शादी करने की याचना मेघनाद से अनेक बार कर चुका था। जब उसे निराश होना पड़ा तो वह नाराज हो गया। क्रोधित होकर युद्ध किया; परन्तु युद्ध में जीतना उसके वश की बात नहीं थी, इस कारण वह वापिस चला गया।

यद्यपि पद्मश्री के भविष्य की घोषणानुसार हस्तिनापुर नगर में कौरववंश में उत्पन्न हुआ कार्तिकेय का पुत्र सुभौम चक्रवर्ती ही पद्मश्री का पति हुआ; परन्तु परसुराम के पिता को कार्तिकेय ने तपस्वी जमदाग्नि कामधेनु के लोभवश मार डाला था, इसकारण *परशुराम* ने क्रोधवश पिता का घात करनेवाले कार्तिकेय को मार डाला; फिर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ। उसने सारी पृथ्वी को क्षत्री रहित करने की चोटी में गाँठ लगाकर प्रतिज्ञा कर ली।

कार्तिकेय की पत्नी तारा गर्भवती थी, उसकी कूँख में ही भावी चक्रवर्ती सुभौम पल रहा था। उसकी सुरक्षा हेतु तारा कौशिक ऋषि के आश्रम में जा पहुँची और वहाँ सुभौम उत्पन्न हुआ। आगे चलकर उसने परशुराम का वध करके क्षत्रियों को निर्भय तो किया ही, पद्मश्री का पति भी सुभौम बना। परशुराम ने अपनी प्रतिज्ञानुसार सात बार क्षत्रियवंश को निर्मूल करने का प्रयत्न किया था; परन्तु ऐसी प्रतिज्ञाएँ करना पागलपन ही है; क्योंकि *जब परमाणु-परमाणु में प्रतिसमय होनेवाला परिणमन स्वतंत्र है तो इतना बड़ा परिवर्तन करना मिथ्या अहंकार ही है।*

जब सुभौम चक्रवर्ती बना तो बदले की भावना से उसने भी सम्पूर्ण ब्राह्मण वर्ग को इक्कीस बार नष्ट कर पृथ्वी को ब्राह्मण रहित करने का असफल प्रयत्न किया। चक्रवर्ती सुभौम साठ हजार वर्ष जीवित रहा और वृथा कर्तृत्व के मिथ्या अहंकार और भोगप्रधान चक्रवर्ती पद रहते हुए ही मरण को प्राप्त होने से सातवें नरक में गया।

दधिमुख ने वसुदेव से आगे कहा ह्न ''राजा मेघनाथ की संतति में आगे चलकर छठवाँ राजा बलि हुआ। राजा बलि विद्याबल में प्रवीण था और तीन खण्ड का स्वामी अर्द्धचक्री (प्रतिनारायण) था। उसी समय बलभद्र के रूप में नन्द और नारायण के रूप में पुण्डरीक हुए। इन्हीं दोनों के द्वारा बलि मारा गया। बलि के वंश में सहस्त्रग्रीव, पंचशत ग्रीव और द्विशतग्रीव आदि बहुत से विद्याधर राजा हो गये। उनमें एक विद्युद्वेग नामक राजा हुए, वे ही हमारे पिता एवं आपके श्वसुर हैं।

नभस्तिलक नगर का राजा त्रिशिखर अपने सूर्यक नामक पुत्र के लिए हमारी बहिन मदनवेगा मांग चुका था; परन्तु वह इसे नहीं पा सका, इसकारण बैर रखता था। एकदिन अवसर पाकर युद्ध छेड़कर उसने हमारे पिता को कारागृह में बन्द कर दिया। अब हमारे सौभाग्य से आप हमें सुलभ हो गये हैं; अतः आप शीघ्र ही हमारे पिताश्री को मुक्त करायें। सुभौम चक्रवर्ती ने जो हमें अस्त्र-शस्त्र दिए थे, उन्हें आप ग्रहण कीजिए।''

इसप्रकार दधिमुख के कहे वचन सुनकर प्रतापी वसुदेव ने श्वसुर विद्युद्वेग को छुड़ाने के लिए विचार किया। चण्डवेग ने युवा वसुदेव को बहुत से देवों द्वारा रक्षित विद्या अस्त्र प्रदान किए।

उस समय बल के अभिमान में त्रिशिखर स्वयं ही सेना के साथ चण्डवेग के नगर आ पहुँचा। 'जिसे जाकर बाँधना था, वह स्वयं ही पास आ गया' यह विचारकर सन्तुष्ट होते हुए वसुदेव विद्याधरों के साथ बाहर निकले। त्रिशिखर और वसुदेव के मध्य भयंकर युद्ध हुआ। युद्धस्थल में धीरता और शूरवीरता से चतुरंगसेना के साथ बहुतकाल तक युद्ध करते रहे। युद्ध करते-करते जब त्रिशिखर स्वयं वसुदेव के सामने आया तो सभी तरह के अस्त्र-शस्त्रों से भयंकर युद्ध हुआ। अन्ततः त्रिशिखर के प्राणान्त होते ही समस्त सेना भाग गई। और वसुदेव कारागृह से अपने श्वसुर विद्युद्वेग को छुड़ाकर अपने नगर वापिस आ गये।

कुमार वसुदेव और मदनवेगा से कामदेव के समान सुन्दर अनावृष्टि नामक नीतिज्ञ और बलवान पुत्र उत्पन्न हुआ। एक दिन अपनी-अपनी पत्नियों के साथ अनेक विद्याधर सिद्धकूट जिनालय की वन्दना करने के लिए गये, उनके साथ कुमार वसुदेव भी मदनवेगा के साथ वहाँ पहुँचे। वन्दनार्थ गये विद्याधर जिनेन्द्र भगवान की पूजा तथा प्रतिमागृहों की वन्दना कर यथायोग्य स्थान बैठ गये। विद्युद्वेग भी भगवान की पूजा कर अपने निकाय के लोगों के साथ बैठ गया। तदनन्तर वसुदेव ने मदनवेगा से विद्याधर निकायों का परिचय पूछा और मदनवेगा एक-एक स्तम्भ के सहारे बैठे अनेक विद्याधर निकायों का संक्षिप्त परिचय कराते हुए यथास्थान बैठ गई।

कहान-संदेश

धर्मी की मंगल भावना

18

प्रश्न : आत्मा के संस्कारों को दृढ़ करने के लिये क्या करें ?

उत्तर : प्रथम वस्तुस्वरूप का निर्णय ग्रहण करना पश्चात् मैं शुद्ध हूँ, एक हूँ, ज्ञायक हूँ, उसका चारों पक्ष से बारम्बार पक्का निर्णय करके दृढ़ करना, इसी से आत्मा के संस्कार दृढ़ होते हैं। जो अपने आतम देव की महत्ता छोड़कर पुण्य-पाप की महत्ता करते हैं, वे कुदेव की महत्ता करते हैं, पुण्य-पाप में कुछ शक्ति नहीं है, उसमें शक्ति का मानना कुदेवपना है।

प्रश्न : ज्ञानी द्रव्यदृष्टि के बल से राग को पुद्गल का मानते हैं; परन्तु जिज्ञासु राग को पुद्गल का माने वह ठीक है क्या ?

उत्तर : जिज्ञासु ही वस्तुस्वरूप के चिन्तन आदि में मानता है कि राग आत्मा का नहीं है, वह तो उपाधिभाव है। पर के आश्रय से उत्पन्न होने के कारण मेरा नहीं है, पुद्गल का है - ऐसा मानता है।

पुण्य-पाप, आस्रव-बंध एवं संवर-निर्जरा-मोक्ष तत्त्व हैं; परन्तु उनमें साररूप तो एक त्रैकालिक तत्त्व ही है, जो द्रव्य और पर्याय दोनों को ही न माने उसे तो तत्त्व की खबर ही नहीं है। श्री समयसार की 11 वीं गाथा में पर्याय को गौण करके उसे अभूतार्थ कहा है। पर्याय का अभाव है ह्न ऐसा नहीं है। श्री नियमसार के 54वें कलश में भी 'सर्वतत्त्व' ऐसा शब्द लिया है। वहाँ पर्याय है ह्न ऐसा सिद्ध करके कहा है कि उनमें सार त्रैकालिक तत्त्व ही है। अलिंगग्रहण के 20वें बोल में कहा है कि - ध्रुव का स्पर्श नहीं करता ह्न ऐसी शुद्धपर्याय वह आत्मा है।

जहाँ जो आशय हो वह समझना चाहिये। यहाँ सम्यग्दर्शन की बात है। सम्यग्दर्शन का विषय त्रैकालिक ध्रुव सामान्य ही सर्व तत्त्वों में सार है। आत्मवस्तु स्वयं ध्रुव है, उस पर लक्ष्य जाने से स्वयं सम्यग्दर्शन होता है।

शुभ राग और अशुभ राग असंख्यप्रकार के हैं; परन्तु वे जीव के नहीं है। ऐसे तो दसवें गुणस्थान तक राग है और यहाँ कहा है कि राग जीव को नहीं है। क्योंकि जीव के स्वरूप में राग है ही नहीं। तथा स्वरूप की दृष्टि करने पर जो अनुभूति होती है, उसमें भी राग का अभाव है। दसवें गुणस्थान में राग है, ऐसा कहकर पर्याय की स्थिति का ज्ञान कराया है; लेकिन वस्तु स्वरूप कैसा है ह्न ऐसा कहकर वस्तु की दृष्टि कराई है; इसलिये राग जड़ में है, पुद्गल का परिणाम है; पर अचेतन है; इसलिये वह जीव में नहीं है। जीव के आश्रय से अनुभूति होती है, वह राग से भिन्न होकर होती है। यदि राग जीव का हो तो वह स्वभाव भाव होने पर कभी भिन्न नहीं होगा।

प्रत्येक पदार्थ की भूतकाल की तथा भविष्य काल की पर्यायें वर्तमान में अविद्यमान होने पर भी सर्वज्ञ भगवान वर्तमानवत् प्रत्यक्ष जानते हैं। अनन्तकाल पूर्व हो चुकी भूतकालीन और अनन्तकाल पश्चात् होनेवाली भविष्य काल की पर्यायें अविद्यमान होने पर भी केवलज्ञान वर्तमानवत् प्रत्यक्ष जानता है।

अहाहा ! जो पर्यायें हो चुकी हैं और जो अभी हुई नहीं हैं - ऐसी भूत-भविष्य की पर्यायों को सर्वज्ञ द्रव्य में योग्यतारूप जानते हैं - ऐसा नहीं है; परन्तु वे पर्यायें वर्तमानवत् प्रत्यक्ष हों ऐसा जानते हैं, वह सर्वज्ञ के ज्ञान की दिव्यता है। भूत-भविष्य की अविद्यमान पर्यायें केवलज्ञान में विद्यमान हैं। अहाहा ! एक समय की केवलज्ञान की पर्याय ऐसी विस्मयजनक और आश्चर्यजनक है, तो सम्पूर्ण द्रव्य की विस्मयता और आश्चर्यता का कहना ही क्या ?

जिसे केवलज्ञान की पर्याय की महिमा आये, जगत के सर्वद्रव्यों की सर्व पर्यायों को एक समय में वर्तमानवत् जाननेवाले ज्ञान का माहात्म्य आये, उसे उनकी धुन लगती है तथा ऐसी पर्यायों को धारण करनेवाले द्रव्य की धुन लगती है, उसे धुन में ध्यान हो जाता है ... ज्ञान की इतनी बड़ी पर्याय ! ऐसी ज्ञानपर्याय की शक्ति का विश्वास करने जाये, वहाँ उसे ध्यान हुए बिना नहीं रहेगा। उसकी धुन पर्याय के ऊपर न रहकर गुण के ऊपर जायेगी और उसमें केवलज्ञान की प्रत्यक्षता होगी ही। जिसके ज्ञान की वर्तमान पर्याय तीनों काल की पर्यायों को जाने अहो ! इस ज्ञानपर्याय की इतनी बड़ी शक्ति ! ऐसी ज्ञानगुण की धुन के बिना उसे जोर आता ही नहीं।

ज्ञेय, ज्ञान और ज्ञाता - ऐसे नामभेद हैं; परन्तु वस्तु में भेद नहीं है। यहाँ स्वतंत्रता की-परिपूर्णता की पराकाष्ठा बताई है। जीव स्वयं ही ज्ञेय, स्वयं ही ज्ञान और स्वयं ही ज्ञाता है, मात्र कथन में भेद है; परन्तु वस्तु में तो ऐसे तीन भेद नहीं हैं, पर मेरा और मैं पर का ऐसे तो नहीं है। पर ज्ञेय और मैं ज्ञायक ऐसा भी नहीं है; परन्तु मैं ज्ञेय और मैं ज्ञायक ऐसा भेद भी नहीं है। वस्तु में ज्ञेय, ज्ञायक और ज्ञाता - ऐसे तीन भेद हैं ही नहीं।

मुद्दे की बात है कि भगवान आत्मा त्रैकालिक ध्रुव होने पर उसमें जो पर्याय होती है, वह क्रमानुसार होती है। राग की दशा हो या सम्यक्त्व की दशा हो; परन्तु वह क्रमानुसार होती है। जिसप्रकार त्रैकालिक वस्तु एकरूप है; उसीप्रकार पर्याय का रूप क्रमानुसार है। जड़ में भी जो पर्याय जिस समय होना है वह होगी और क्रमानुसार ही होगी। आत्मा में अज्ञानरूप से जो पर्याय क्रमानुसार हो उसका अज्ञानी कर्ता होता है, धर्मी को जो क्रमानुसार रागादि आते हैं, उनका वह कर्ता न होकर ज्ञाता ही रहता है।

ज्ञान की अचिंत्य महिमा का चिन्तन संसार के सर्व क्लेश को भुला देता है। अहो ! यह बात समझकर स्वयं में उतारने जैसी है। स्वयं का हित करने के लिए यह बात है। **(क्रमशः)**

पूरे देश में अष्टान्हिका पर्व धूम-धाम से मनाया गया

1. **जयपुर :** आषाढ़ माह की अष्टान्हिका पर्व के अवसर पर दिनांक 6 जुलाई से 13 जुलाई 2003 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन में टोडरमल महिला मुमुक्षु मण्डल बापूनगर की ओर से श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील के प्रात: सिद्धचक्र विधान की जयमाला पर प्रवचन हुये। सायं प्रतिदिन टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय के विद्यार्थियों के प्रवचन के पश्चात् डॉ.दीपकजी जैन के नाटक समयसार पर प्रवचन हुये। सायंकाल महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा जिनेन्द्रभक्ति भी होती थी।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित चिन्मय जैन पिड़ावा एवं समस्त महाविद्यालय के छात्रों ने सम्पन्न कराये।

2. **सीमन्धर जिनालय (जौहरी बाजार) :** यहाँ अष्टान्हिका पर्व के अवसर पर समाज के विशेष आग्रह से पधारे करणानुयोग के विशेषज्ञ ब्र. यशपालजी जैन जयपुर के दिनांक 6 जुलाई से 13 जुलाई 2003 तक गुणस्थान विवेचन पर मार्मिक प्रवचन हुये।

सीमन्धर जिनालय के अतिरिक्त श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल बृहन्मुम्बई के संयोजकत्व में -

दादर में पण्डित सुबोधकुमारजी सिवनी, **मलाड** में पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड एवं पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री गोरेगाँव, **बोरीवली** में पण्डित कस्तूरचन्द विदिशा, **दहीसर** में पण्डित अरुणजी मोदी सागर, **भायंदर** में पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री जयपुर के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ समाज को मिला।

3. **अजमेर (राज.) :** यहाँ अष्टान्हिका पर्व के अवसर पर श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट अजमेर के तत्त्वावधान में श्री सीमंधर जिनालय में दिनांक 6 जुलाई से 13 जुलाई तक श्री सिद्धपरमेष्ठी विधान सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर खण्डवा से पधारी विदुषी बहिन श्रीमती पुष्पा जैन द्वारा प्रात: एवं सायं दोनों समय मार्मिक प्रवचन हुये, जिसका समस्त समाज ने लाभ लिया।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित अभिनयकुमारजी शास्त्री जबलपुर, श्री हीराचन्दजी बोहरा जयपुर, कु. शिल्पी जैन, कु. निवेदिता बज एवं पिड़ावा से पधारी संगीत मण्डली द्वारा सम्पन्न हुये।

4. **दिल्ली :** यहाँ आत्मसाधना केन्द्र में दिनांक 7 जुलाई से 13 जुलाई तक पण्डित राकेशजी शास्त्री के निर्देशन में भक्तामर मण्डल विधान का सफल आयोजन कु. रेशु जैन सुपुत्री श्री विमलकुमारजी जैन की ओर से किया गया।

इस अवसर पर प्रात: एवं दोपहर पण्डित मनीषजी शास्त्री खड़ैरी के समयसार एवं भगवती आराधना पर प्रवचन हुये। साथ ही सायंकाल पण्डित राकेशजी शास्त्री के प्रवचनसार पर मार्मिक प्रवचन हुए।

विधि-विधान के कार्य पण्डित मनीषजी शास्त्री तथा पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराये गये।

5. **बांसवाड़ा (राज.) :** यहाँ श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में अष्टान्हिका के अवसर पर दिनांक 6 जुलाई से 13 जुलाई 2003 तक बांसवाड़ा से पधारे पण्डित राजकुमारजी शास्त्री द्वारा क्रमबद्ध पर्याय पर विशेष कक्षा ली गई। प्रात:कालीन तत्त्वचर्चा में पण्डित गजेन्द्रकुमारजी शास्त्री द्वारा बारहभावनाओं पर विवेचन किया गया। जिसका सम्पूर्ण समाज ने लाभ लिया।

6. **भागलपुर (बिहार) :** यहाँ श्री चम्पापुर दिग. जैन सिद्धक्षेत्र में पर्व के अवसर पर श्री भंवरलालजी साहित्याचार्य परिवार, दिल्ली द्वारा श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित जागेशकुमारजी शास्त्री, जबेरा एवं पण्डित मनीषकुमारजी 'सिद्धान्त' खड़ैरी के प्रतिदिन सरल-सुबोध शैली में सारगर्भित प्रवचन हुये।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराये गये। **- सुनीलकुमार पाण्ड्या**

7. **फलटन (सातारा-महा.) :** यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित संतोष सावजी द्वारा प्रात: सागार धर्मामृत, दोपहर में नयचक्र एवं रात्रि में बालकक्षा एवं नियमसार पर प्रवचन किये गये।

8. **ग्वालियर (म.प्र.) :** यहाँ श्री वासुपूज्य दिग. जैन मन्दिर पंचायती सोडा का कुआं में दिनांक 6 जुलाई से 13 जुलाई 2003 तक श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित अभिषेक जैन एवं पण्डित आशीष शास्त्री भिण्ड द्वारा प्रवचन एवं कक्षाओं का आयोजन किया गया।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित अभिषेक जैन एवं पण्डित आशीष जैन द्वारा सम्पन्न किये गये। प्रतिदिन रात्रि में ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। **- धनेन्द्र सिंहल**

9. **सोनागिर (म.प्र.) :** यहाँ पर्व के अवसर पर मन्दिर नं.3 में ब्र. पदमचन्दजी स्योढ़ावालों द्वारा श्री तीनलोक मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित केशरीमलजी पाटनी एवं पण्डित मांगीलालजी कोलारस के प्रवचनों का लाभ समाज को मिला।

विधि-विधान के कार्य पण्डित पूरनचन्दजी मौ द्वारा सम्पन्न कराये गये। **- पदमचन्द जैन**

अनेक बाल संस्कार शिविर सानन्द सम्पन्न

1. **उदयपुर (राज.) :** श्री कुन्दकुन्द वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति उदयपुर द्वारा आयोजित बाल संस्कार शिक्षण शिविर एवं इन्द्र ध्वज मण्डल विधान दिनांक 19 जून से 29 जून 2003 तक सानन्द सम्पन्न हुआ।

शिविर में पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा एवं डॉ. श्रेयांसकुमारजी सिंघई के प्रवचन हुये।

यहाँ पण्डित कोमलचन्दजी टड़ा एवं पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा के निर्देशन में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के 30 विद्वानों ने तथा ब्र. समताजी, ब्र. ज्ञानधराजी एवं ब्र. पुष्पाजी ने शिविर के अवसर पर उपस्थित 500 बालकों को 17 कक्षाओं में विभाजित करके पढ़ाया।

दोपहर में बालकों की सामूहिक कक्षा पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा एवं डॉ. महावीरप्रसादजी टोकर लेते थे। दोपहर में ही पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा तथा श्रीमती राजकुमारी बेन जयपुर द्वारा प्रौढ़ कक्षायें ली गई।

शिविर के अवसर पर दो दिन के लिये ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री एवं ब्र. यशपालजी जैन का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ।

दिनांक 25 जून 2003 को **तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल** अभिनन्दन ग्रन्थ की द्वितीय आवृत्ति का विमोचन डॉ. जामनदासजी मेहता के करकमलों से हुआ।

इस अवसर पर विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित धनसिंहजी पिड़ावा तथा पण्डित सुबोधकुमारजी शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराये गये। प्रतिदिन रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया।

अन्तिम दिन आयोजित परीक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को पुरस्कार दिये गये।

इस अवसर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर को साहित्य की कीमत कम करने में 20 हजार रुपये की दान राशि प्राप्त हुई।

2. **दिल्ली :** आत्मार्थी ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिल्ली के चतुर्दिक क्षेत्र में दिनांक 12 जून से 5 जुलाई 2003 तक शिविर आयोजित हुआ।

शिविर में लगभग 450 बालकों एवं 500 मुमुक्षु भाईयों ने लाभ लिया। कक्षाओं एवं कार्यक्रम आदि के माध्यम से पण्डित संदीपजी शास्त्री, पण्डित मनीषजी शास्त्री एवं पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री ने बालकों को वैज्ञानिक पद्धति से धार्मिक व नैतिक ज्ञान कराया।

अन्तिम दिन पण्डित राकेशजी शास्त्री ने ऐसी शिविर शृंखलाओं के आयोजन की आवश्यकता को बताया।

3. **अजमेर :** श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में वीतराग-विज्ञान भवन पुरानी मण्डी में ग्रीष्मकालीन आध्यात्मिक बाल व युवा चेतना शिविर 21 जून से 30 जून 2003 तक सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया के दोनों समय प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं पण्डित अनुज जैन द्वारा बाल कक्षायें ली गई।

अन्तिम दिन बालकों की परीक्षा ली गई। रात्रि में लघु नाटिकाओं के मंचन के उपरान्त श्री प्रदीपजी चौधरी की अध्यक्षता में श्री श्रेणिक जैन मुम्बई एवं कु. मेघा जैन अजमेर द्वारा बालकों को पुरस्कार वितरित किये गये।

रविवारीय गोष्ठियाँ सानन्द सम्पन्न

1. **जयपुर :** यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के प्रांगण में नवीन सत्र की प्रथम रविवारीय गोष्ठी दिनांक 13 जुलाई को आयोजित की गई; जिसका विषय **देव-शास्त्र-गुरु** रखा गया। गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. सतीशकुमारजी शास्त्री, मौ ने की।

सभी वक्ताओं ने देव-शास्त्र-गुरु के सच्चे स्वरूप को विभिन्न ग्रन्थों के माध्यम से स्पष्ट करते हुये उनके सम्बन्ध में फैली भ्रान्तियों का खण्डन किया।

श्रेष्ठ वक्ता पुरस्कार उपाध्याय वर्ग से निपुण जैन टीकमगढ़ तथा शास्त्री वर्ग से सौरभ जैन शहपुरा को दिया गया।

गोष्ठी का संचालन प्रक्षाल जैन उदयपुर ने तथा संयोजन नीरज जैन खड़ैरी ने किया। **-सौरभ शाहगढ़**

2. **जयपुर :** महाविद्यालय परिसर में ही दिनांक 20 जुलाई को द्वितीय रविवारीय गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसका विषय **सम्यग्दर्शन : एक अनुचिन्तन** रखा गया।

अध्यक्षीय भाषण के रूप में महाविद्यालय के अधीक्षक पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने कहा कि - **'णाणं हि णरस्स सारो** अर्थात् सम्यक्ज्ञान प्राप्त करने में ही मनुष्य जन्म की सफलता है; अत: मरपचकर भी सम्यग्दर्शन-ज्ञान की प्राप्ति करने में ही सार है, अन्य सबकुछ असार है।' साथ ही आपने सभी विद्यार्थियों को अच्छे वक्तृत्व के गुणों से भी अवगत कराते हुये उन्हें अपनी भाषा-शैली को श्रेष्ठ बनाने हेतु निर्देश दिये।

श्रेष्ठ वक्ता पुरस्कार उपाध्याय वर्ग से रोहन रोटे तथा शास्त्री वर्ग से दीपेश जैन गुढ़ा को दिया गया।

गोष्ठी का संचालन विशाल सर्राफ ने तथा संयोजन सौरभ जैन शाहगढ़ ने किया। **-नीरज खड़ैरी**

धर्म-प्रभावना

दिल्ली (शाहदरा) : श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर शाहदरा में दिनांक 1 मई से 3 जुलाई तक लगातार दो माह तक धर्म-प्रभावना हुई, जिसका लाभ समस्त साधर्मी भाइयों ने लिया।

इस अवसर पर पण्डित देवेन्द्रकुमारजी शास्त्री द्वारा क्रमबद्धपर्याय पर प्रवचन तथा दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र पर कक्षा के अतिरिक्त वीतराग-विज्ञान पाठमाला एवं बालबोध पाठमाला की कक्षा ली गई।

इसी बीच रत्नत्रय विधान का आयोजन भी किया गया। जिसके विधि-विधान सम्बन्धी कार्य पण्डित देवेन्द्रजी एवं पण्डित विकासजी दिल्ली द्वारा कराये गये। **- सुशीलकुमारजी जैन**

वीर शासन जयन्ती सानन्द सम्पन्न

बांसवाड़ा (खान्दू कॉलोनी) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में वीरशासन जयन्ती के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें पण्डित राजकुमारजी शास्त्री एवं पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री के अतिरिक्त महीपाल ज्ञायक, सुरेश जैन, श्रीमती सुलक्षणा जैन, धनपाल ज्ञायक, श्रीमती ममता जैन एवं वीरेन्द्र ज्ञायक ने अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री धनपालजी दोसी ने तथा संचालन श्री गजेन्द्र जैन ने किया।

तत्त्वचर्चा

समयसार का सार 71

गतांक से आगे

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

हम भगवान के सामने भक्ति करते हैं और भक्ति करते–करते ही आँखों में आसूँ आ जायें और हम गद्‌गद् हो जायें तो दुनिया हमको देखकर समझती है कि हम बहुत बड़े धर्मात्मा हैं। दुनिया समझे तो समझे; लेकिन हमको भी अन्दर से ऐसा लगने लगता है कि अब मुझमें बहुत फर्क आ गया है; मैं एकदम धर्मात्मा हो गया हूँ। लेकिन यह मरघटिया वैराग्य है, भावुकता है। इससे किंचित् मात्र भी धर्म नहीं होता है।

हाँ हम इतना जरूर कह सकते हैं कि उसमें थोड़ी ऐसी पात्रता का परिपाक अवश्य हुआ है कि ऐसे में कोई सत्य बात सुनने को, समझने को मिल जाय, तो कल्याण हो सकता है, वह भी नियमरूप कारण नहीं है। बस ये रास्ता तो ज्ञान का रास्ता है।

बंध अधिकार तक हम इस पूर्वोक्त निष्कर्ष पर पहुँच चुके हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि ठीक है। बंध से विमुक्त होना है तो बंध का अभ्यास करो। वे चरणानुयोग नहीं पढ़ते; क्योंकि वह क्रियाकाण्ड में चला गया। प्रथमानुयोग उनकी दृष्टि में कहानी–किस्सों में चला गया। करणानुयोग में जो बंध का बहुत विस्तार से वर्णन है, उसे पढ़ते हैं।

मुझे कभी–कभी विचार आता है कि ऐसी बात कुन्दकुन्दाचार्य ने क्यों लिखी ? क्या उनके सामने ऐसे लोग रहे होंगे कि जो कर्मबंधन का ज्ञान करके अपने आपको मुक्तिमार्गी मानते होंगे,

आज से 50 वर्ष पूर्व करणानुयोग के अभ्यासी को ही सबसे बड़ा पण्डित माना जाता था। त्यागी, व्रती, ब्रह्मचारी, पण्डित सभी करणानुयोग का ही अध्ययन करते थे। ऐसा लगता है कि कुन्दकुन्द के पहले भी बिल्कुल ऐसा ही वातावरण बना होगा, जैसा कानजीस्वामी के पहले करणानुयोग के स्वाध्याय का था।

धर्म के नाम पर कर्म की चर्चा होती थी। कौन से गुणस्थान में कौन–सा कर्म, कर्म की कितनी प्रकृतियाँ, कब बंधती हैं, कैसे बंधती हैं, कब उदय में आती हैं, कब उदय में नहीं आती हैं, सत्ता में कब रहती हैं, उत्कर्षण किनका होता है, अपकर्षण किनका होता है, इन सबकी विस्तृत चर्चा होती थी और इसी का नाम तत्त्वचर्चा था।

जब हम पढ़ते थे, तब भी करणानुयोग का बहुत जोर था। उस समय हमारे महाविद्यालय के अधिष्ठाता बालब्रह्मचारी प्यारेलालजी भगत, जिन्हें सभी लोग भगतजी कहते थे; उन्होंने हमारी गोम्मटसार की परीक्षा ली थी और उन्होंने हम दोनों भाइयों को दस–दस रुपये इनाम दिये थे।

उस जमाने के दस रुपये आज के जमाने के हजार रुपये के बराबर थे। हम उस जमाने की बात कर रहे हैं, जब एक रुपया किलो घी था, आजकल तो शायद डेढ़ सौ रुपये किलो होगा। उससमय के दस रुपये आज के जमाने से डेढ़ सौ गुना अधिक कीमत रखते थे।

हमारे गुरुजी (पण्डित नन्हेलालजी सिद्धान्तशास्त्री) कहा करते थे कि ये नोकदार टोपियाँ काम आने वाली नहीं हैं, जबतक तुम्हें गोम्मटसार का, करणानुयोग का, बहुत गहरा अभ्यास नहीं होगा; तबतक समाज तुम्हें पण्डित माननेवाली नहीं है।

कुन्दकुन्दाचार्य के पहले भी ऐसे लोग बहुत होंगे जो सुबह से शाम तक निरन्तर कर्म प्रकृतियों का ही अध्ययन करते होंगे और ऐसा समझते होंगे कि पूरा दिन धर्म में ही गया। ऐसे लोगों के लिए उन्होंने यह बात लिखी कि कर्म के ज्ञान से तथा बंध के ज्ञान से तुम्हें मुक्ति की प्राप्ति नहीं होगी और बंधन का चिंतन करने से तथा उसी में निरंतर उपयोग लगाए रखने से भी मुक्ति की प्राप्ति नहीं होगी।

अमृतचन्द्राचार्यजी ने जो इसकी टीका लिखी, उसकी अंतिम पंक्ति ध्यान देने योग्य है, वह इसप्रकार है –

एतेन कर्मबंधप्रपंचरचनापरिज्ञानमात्रसंतुष्टा उत्थाप्यंते।

जो संस्कृत जानते हैं, वे तो अन्दाजा लगा सकते हैं कि आचार्यदेव क्या कहना चाहते हैं। बहुत ही कठोर भाषा है। जैसे – और जगह कहते हैं कि इससे मीमांसक मत का खण्डन किया अथवा इससे सांख्यमत का निरसन किया। न्यायशास्त्र में जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, उसी भाषा का उपयोग यहाँ करणानुयोग का अभ्यास करनेवालों के लिए किया है।

इसमें जो प्रपंच शब्द लिखा है, उस प्रपंच का अर्थ विस्तार होता है। वैसे आजकल प्रपंच शब्द काफी बदनाम है। कहते हैं कि वह आदमी बड़ा प्रपंची है। देखो भैया ! तुम हमारे सामने प्रपंच मत करो, बहुत प्रपंच हो गया – अब बस करो। जो कर्मबंध की चर्चा में ही पड़े है, उनके लिए आचार्य कह रहे हैं कि वे प्रपंचों में ही पड़े हैं। उस समय प्रपंच का अर्थ इतना बुरा नहीं होता था, जितना आज होता है। उस समय प्रपंच में पड़े का अर्थ होता था विस्तार में उलझ गए हैं।

तो इस पंक्ति का अर्थ है कि इसप्रकार कर्मबंध के विस्तार के परिज्ञान से जो संतुष्ट हो गए हैं, ऐसे लोगों को उखाड़ के फैंक दिया अर्थात् उनका खण्डन कर दिया।

वे धर्मात्मा हैं, इस धोखे में वे आ गए हैं; पर इसमें धर्म रंचमात्र भी नहीं है। यदि शुभभाव होगा तो पुण्य का बंध अवश्य होगा। उसमें भी यदि मैं चौड़ा और बाजार संकरा अर्थात् विद्वता का मान आ गया तो वह भी नहीं होगा।

आज भी जो करणानुयोग के विशेषज्ञ हैं, उनमें अधिकांश की रीढ़ की हड्डी मान के कारण सीधी नहीं रहती है। गिने–चुने दो चार लोग ही हैं; किन्तु वे जमीन की तरफ देखते ही

नहीं। वे अन्य विद्वानों को महातुच्छ समझते हैं और स्वयं को साक्षात् केवलज्ञान हो गया हो व हम ही मोक्ष जाने वाले हैं – ऐसा मानते हैं।

इसलिए कुन्दकुन्दाचार्य को ये शब्द लिखने पड़े कि जो कर्मबंध के प्रपंच की रचना के ज्ञानमात्र से संतुष्ट हो रहे हैं, इस कथन से, उनका उत्थापन (खण्डन) किया गया है।

जययंदजी छाबड़ा भी भावार्थ में उक्त कथन का इसीप्रकार स्पष्टीकरण करते हैं –

''कोई अन्यमती यह मानते हैं कि बंध के स्वरूप को जान लेने से ही मोक्ष हो जाता है। उनकी इस मान्यता का इस कथन से निराकरण कर दिया गया है। जाननेमात्र से ही बन्ध नहीं कट जाता; अपितु वह काटने से ही कटता है।''

करणानुयोग की स्थापना की बात समझनी हो तो पण्डित टोडरमलजी ने जो सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका लिखी है, उसकी प्रस्तावना में बहुत विस्तार से इसकी स्थापना की है, उससे पढ़ना चाहिए। वहाँ लिखा है – अर्थ के पक्षपाती, अध्यातम के पक्षपाती, चरणानुयोग के पक्षपाती, प्रथमानुयोग के पक्षपाती इसका निषेध करते हैं; वह सही नहीं है। इसके अध्ययन से क्या लाभ है, वे सब वहाँ बताये हैं।

उसके बाद टोडरमलजी ने आगे लिखा कि कर्मबंध के प्रपंच की रचना के ज्ञानमात्र से संतुष्ट लोग अपने को धर्मात्मा समझ लें और वे समझे कि इससे मेरे कर्म का नाश हो जायेगा तो वे धोखे में हैं।

जयसेनाचार्यजी ने तो और भी कठोर शब्दों में लिखा है कि ये तो शुभभावरूप धर्मध्यान है। धर्मध्यान के अपायविचय, विपाकविचय आदि जो भेद हैं; उनकी चर्चा तो व्यवहारधर्मध्यान है। इससे तो बंध होता है, जबकि धर्मध्यान तो अपने आत्मा के अनुभवरूप होता है – ऐसा विस्तार से लिखा है।

इसी मोक्ष–अधिकार में फिर प्रश्न किया कि हम बंधन से मुक्त कैसे होंगे तो उन्होंने एक शब्द का प्रयोग किया कि द्विधाकरण ही एकमात्र उपाय है।

इस उपाय को जानने से पूर्व उक्त गाथा के अर्थ को जानना भी अवश्यक है –

जह बंधे छेत्तूण य बंधणबद्धो दु पावदि विमोक्खं।
तह बंधे छेत्तूण य जीवे संपावदि विमोक्खं।।292।।

जिसप्रकार बंधनबद्ध पुरुष, न तो बंधन के ज्ञान से बंधन से मुक्त हो सकता है और न ही बंधन के चिंतन से। यदि वह बंधन को काट दे तो बंधन से मुक्त होगा।

इसीप्रकार कर्मबंधन से बंधे जीव न तो कर्मबंधन के ज्ञान से कर्मबंधन से मुक्त होंगे और न ही कर्मबंधन के चिंतन से भी मुक्त होंगे। वे बंधन को काटेंगे, तो मुक्त होंगे।

जयसेनाचार्य ने तो भेत्तूण, छेत्तूण, मोत्तूण ये तीन अर्थ किए अर्थात् भेदकर, छेदकर, काटकर। इसप्रकार उन्होंने गाथाओं की गिनती में इसकी तीन गाथाएँ मानी हैं।

कुछ लोग इसका अर्थ करते हुए कहते हैं कि बंधन को काटना पड़ेगा और बंधन तप से कटते हैं तथा तप उपवास हैं। इसप्रकार वे लौट फिर कर वापिस क्रियाकाण्ड पर ही आ जाते हैं। इसप्रकार करणानुयोग से आरंभ कर चरणानुयोग पर चले जाते हैं।

ऐसे लोगों को लक्ष्य करके ही आचार्य अमृतचन्द्रजी गाथा 291 की टीका में लिखते हैं –

एतेन कर्मबंधविषयचिंताप्रबन्धात्मकविशुद्धधर्मध्यानांधबुद्धयो बोध्यंते।

इससे कर्मबंध के विषय की चिंता के प्रबंधात्मक विशुद्धधर्म ध्यान से अंधी है बुद्धि जिनकी; उन्हें हम समझा रहे हैं।

उनके समय में भी ऐसे लोग रहे होंगे न कि जिनको लक्ष्य करके उन्होंने ये शब्द लिखे हैं।

जो अभी 292 नं. की गाथा पढ़ी थी, उसी की टीका में लिखा है –

बंधन का छेदन करने से बंध कटेगा। इसका अर्थ यह नहीं है कि तुम फिर क्रियाकाण्ड में लग जाओ। इससे आत्मा और बंध इन दोनों के बीच में भेदविज्ञान की बात है अर्थात् आत्मा और बंध के द्विधाकरण की बात है।

इन गाथाओं की टीका की जो अंतिम पंक्तियाँ हैं; उनमें बंध और आत्मा के बीच भेदविज्ञान करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं और कह रहे हैं कि भेदविज्ञान की जो प्रक्रिया है, उसमें तुम चलो, वह मुक्ति का कारण है।

गाथा नं. 292 की टीका में लिखा है –

कर्म से बंधे हुए (पुरुष) को बन्ध का छेद मोक्ष का कारण है; क्योंकि जैसे बेड़ी आदि से बद्ध को बन्ध का छेद बंध से छूटने का कारण है; उसीप्रकार कर्म से बंधे हुए को कर्मबंध का छेद कर्मबंध से छूटने का कारण है। इस (कथन) से, पूर्वकथित दोनों को (जो बंध के स्वरूप के ज्ञानमात्र से संतुष्ट हैं तथा जो बंध का विचार किया करते हैं उनको) आत्मा और बंध के द्विधाकरण में व्यापार कराया जाता है अर्थात् आत्मा और बंध को भिन्न–भिन्न करने के प्रति लगाया जाता है, उद्यम कराया जाता है; क्योंकि मोक्ष का कारण एकमात्र द्विधाकरण ही है और यही मोक्ष अधिकार की प्रारंभ की 8–10 गाथाओं का निष्कर्ष है।

यह मर्म की बात आप मेरे कहने से स्वीकार नहीं करते, इसलिए मैंने खुद आचार्य की टीका एवं मूल गाथाएँ पढ़ीं।

बंध के विचार से कर्म नहीं कटेंगे, बंध काटने की प्रक्रिया द्विधाकरण है अर्थात् बंध और आत्मा, इन दोनों को भिन्न–भिन्न जानना ही एकमात्र उपाय है।

(क्रमशः)

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

वैराग्य समाचार

1. **जयपुर निवासी** श्री कपूरचन्दजी गोधा (लवाण वालों) का दिनांक 23 जुलाई 2003 को शान्त परिणामों पूर्वक देहावसान हो गया है।

आप तत्त्वज्ञान की गतिविधियों में अन्वरत रूप से जुड़े रहे। आपका जीवन धार्मिक एवं सदाचारमय था। आपने अपने परिवार को भी गहरे धार्मिक संस्कार दिये, इसी का प्रतिफल है कि आपके पुत्र महावीरकुमार गोधा एवं ताराचन्द गोधा वर्तमान में तत्त्वप्रचार की गतिविधियों में संलग्न हैं।

आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक को 501/-रुपये एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को साहित्य की कीमत कम करने में 2100/- रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

2. **इन्दौर निवासी** श्री मनोहरलालजी काला की पुत्रवधू श्रीमती सीमा काला धर्मपत्नी श्री राजेश काला का दिनांक 8 जुलाई 2003 को 31 वर्ष की आयु में हृदय गति रुक जाने से देहावसान हो गया है। आप एक धार्मिक महिला थीं। आप मुमुक्षु मण्डल साधनानगर, इन्दौर के सभी कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेतीं रही।

आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक समिति को 500/- रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

3. **काकरिया तलाई (म.प्र.)** निवासी स्व. भूरालालजी अजमेरा की धर्मपत्नी चांदबाई अजमेरा का दिनांक 16 जून 2003 को शान्त परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया है।

आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक समिति एवं वीतराग-विज्ञान को कुल 1002/- रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही निर्वाण को प्राप्त हों यही मंगल कामना है।

विधान सानन्द सम्पन्न

कुरावली : यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 19 जुलाई से 21 जुलाई तक श्री पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियाँधाना, पण्डित विरागजी मोदी, ब्र. महेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित अभिनवजी शास्त्री, पण्डित अभिनयजी शास्त्री एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री द्वारा प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ।

समस्त कार्यक्रम ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

ज्ञातव्य है कि यहाँ नवम्बर 2003 में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन होने जा रहा है।

साहित्य का आर्डर शीघ्र भेजें

पर्यूषण पर्व के अवसर पर अनेक संस्थाओं से साहित्य मंगाने हेतु आर्डर प्राप्त होते हैं; परन्तु मौसम की तकलीफ के कारण उन्हें समय पर साहित्य उपलब्ध नहीं हो पाता है। अत: जिन भाईयों को पर्यूषण पर्व पर वितरण अथवा बिक्री हेतु साहित्य की आवश्यकता हो वे अपने आर्डर हमें अभी से भेज देवें ताकि उन्हें सही समय पर साहित्य प्राप्त हो सके।

- साहित्य बिक्री विभाग, पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर

पाठशाला निरीक्षण सम्पन्न

1. श्री टोडरमल स्मारक दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के छात्र पण्डित सुनीलकुमार बेलोकर द्वारा महाराष्ट्र के बुलढ़ाणा जिला के अन्तर्गत मलकापुर, मोताला, नांदुरा, बुलढ़ाणा, खामगांव, डोणगांव, ढासाला, चिखलि, विहीगांव आदि स्थानों पर श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाओं का निरीक्षण किया गया। प्रत्येक स्थान पर प्रवचन एवं विधानादि का आयोजन किया गया।

2. महाविद्यालय के ही स्नातक छात्र पण्डित संतोषकुमार सावजी द्वारा महाराष्ट्र प्रान्त में सोलापुर, सातारा, पूना, कोल्हापुर, ठाणे, वाशिम आदि जिलों के निमगांव, केतकी, लासुर्णे, भिगवन, नातेपुते, अकलूज, वैराग, कोल्हापुर, रुईकर कॉलोनी, शाहूपुरी, हेरले, शिरदवाड, पेठवडगाव, फलटण, पूना, जैन बोर्डिंग, गुलटेकडी, कल्पवृक्ष, चिन्चवड, थेरगांव, भिवंडी, डोंबीवली, वाशिम, मालेगांव आदि स्थानों पर विगत 2 माह में पाठशालाओं का निरीक्षण किया गया। साथ ही अनेक नवीन पाठशालाओं का गठन एवं बन्द पाठशालाओं का पुनर्गठन किया गया। लगभग सभी स्थानों पर प्रवचन, कक्षा एवं कार्यक्रम आयोजित किये गये।

हरिवंश कथा के सम्बन्ध में -

इन्दौर से प्रतिष्ठासूरी श्री नाथूलालजी शास्त्री लिखते हैं कि -

''श्री पण्डित रतनचन्दजी द्वारा लिखित हरिवंशकथा स्वाध्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूर्ण करनेवाली उपयोगी और सार्थक रचना है। ढूंढ़ारी भाषा में प्रकाशित प्रथमानुयोग के ग्रन्थ अथवा पीछे संस्कृत शब्दों के हिन्दी अर्थ सहित प्रकाशित ग्रन्थ दोनों ही से स्वाध्यार्थी पुरुष एवं महिलायें संतुष्ट नहीं थे। प्रस्तुत ग्रन्थ उक्त पाठकों की रुचि और बुद्धि के अनुकूल सरल, सुबोध और आधुनिक शैली में लिखा गया है, जो अनति विस्तृत और अल्पमूल्य में उपलब्ध है। इसमें उचित संसोधन के साथ धार्मिक विषयों का समावेश भी है तथा करणानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग संबन्धी आवश्यक सामग्री भी रख दी गई है। वर्तमान में ऐसे ही ग्रन्थों की आवश्यकता है, जिसकी पूर्ति ऐसी रचनाओं से की जा रही है। विद्वान लेखक का यह परिश्रम सराहनीय है।''

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) अगस्त (प्रथम) 2003
J.P.C. 3779/**02/2003-05**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा जयपुर,** डबल एम.ए. (जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन) तथा इतिहास
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127